प्रकृति का ताना-बाना

दिलीप चिंचालकर

अगहन (मोटे तौर पर नवम्बर) शुरू हुए अभी हफ्ता ही हुआ था। सुबह-शाम हवा में जाड़े की खनक थी। मगर दिन अभी भी क्वाँर-सा (सितम्बर के आसपास का समय) तल्ख था। पता नहीं, चींटियाँ क्यों मुँह में अण्डे दबाए भागी चली जा रही थीं। वैसे ही जैसे जेठ के आखिरी दिनों में वर्षा शुरू होने से पहले करती हैं। मन में खटका हुआ कि हवा में ज़रूर कुछ सुगबुगाहट है जिसे हम नहीं पकड़ पा रहे हैं। ठीक उसी समय भारतीय अन्तरीप के पार हिन्द महासागर में मौसम कुछ खिचड़ी पका रहा था जिसकी भनक दुबली चींटियों को लग गई थी। मनुष्य को तब पता चला जब चार दिन बाद "फ्यान" (बर्मा की भाषा में "पेड़ से गिरी चेरी") ने उत्तर-पश्चिमी भारत में तूफान खड़ा कर दिया।

रात भर की बारिश ने पेड़ों से फूलों को धो दिया है। सुबह सैर करने वालों को सड़क पल्टाफोरम, आकाशनीम, सहजन के फूलों से पटी मिली। इसमें गुलमोहर के दो लाल फूल और जेकेरेण्डा के दो जामुनी फूल भी बरामद हुए। इन पेड़ों पर बहार तो गर्मियों में आती है पर अब भी कहीं इनकी फुनगियों पर फूल दिख रहे हैं। आधा साल बीत जाने के बाद भी! मैं हैरान हूँ। प्रकृति चुपचाप क्या जोड़-तोड़ करती रहती है?

पचास-पचपन साल पहले की बात है। बारिश के मौसम में मैदान-खेत घास से भर जाते थे। दिवाली आते-आते तक यह पककर पीली-गुलाबी हो जाती थी। गाय-बैल साल भर इसे चाव से खाते थे। अँग्रेज़ी कविता "पिकॉज मॉर्निंग सांग" के लार्क (अग्गिया) पक्षी भी इन्हें खाकर मुटियाते थे। फिर इसकी जगह गोखरू और चिरचिटा (कहते हैं जिसके बीजों से सिर धोने पर साल भर बालों में जुएँ नहीं होतीं) की झाड़ियों ने ले ली। उसके बाद मैदान सम्भाला पीले फूलों और लम्बी फलियों वाले पुवाड़्या ने। चालीस साल पहले अमरीका से मैक्सिकन गेहूँ क्या आई उसके साथ गाजर घास भी भारत आ गई। तब से शहरी पड़त ज़मीनों पर उसने कब्ज़ा कर रखा था। पिछले दो-तीन साल से पुवाड़्या फिर से लौट रही है। समय-असमय वर्षा-गर्मी और ठण्ड से प्रकृति क्या खरपतवार, मच्छर-मेंढकों और सब प्राणियों को बराबर करती रहती है?

नवम्बर महीने में इतनी बारिश कम ही देखने में आती है। आने वाला दिसम्बर भी ऐसी ही बिरली घटना का महीना है। कभी-कभार होने वाली बात को अँग्रेज़ी में "वन्स इन ए ब्लू मून" कहते हैं। यानी दुर्लभ नीले चाँद की मौजूदगी में। आमतौर पर एक महीने में एक पूर्णिमा आती है। जब एक महीने में दो पूर्ण चन्द्र दिखाई देते हैं तो दूसरे को नीला चाँद या ब्लू मून कहते हैं। दिसम्बर की पहली तारीख को मार्गशीर्ष पूर्णिमा है और इक्कतीस, अर्थात साल की आखिरी पूस की रात को दूसरी पूर्णिमा होगी। ऐसा ढाई साल में एक बार होता है। देखते हैं इस बार क्या नया घटता है!

फ्यान से झरे फूलों के कारण हो सकता है कि उनसे बनने वाले फल या फलियाँ इस बार कुछ देर से खाने को मिलें। लेकिन इतना तय है कि ज़मीन में नमी होने के कारण गेहूँ और चने की फसल अच्छी होगी। दूसरी किस्म की घास भी खूब उगेगी। और हो सकता है कि कीड़े और इल्लियाँ भी। साईबेरिया, ईरान और अफ्गानिस्तान से उड़कर भारत आने वाले प्रवासी पंछियों के लिए तो दावत होगी ही, यहाँ के मैदानों में रहनेवाले पक्षियों के लिए भी ये सर्दियाँ मज़े की होंगी। चकमक